B.A. (Hons) Part II
Philosophy - Paper III
Topic - पुरुषार्थ
Dr. Sachidanand Prasad.
R.R.S. College, Mokama.

(1)

हिन्दू धर्म की एक विशेषता यह भी है कि वह पुरुषार्थ में विश्वास करता है। पुरुषार्थ दो शब्दों पुरुष और अर्थ के संयोग से बना है जिसमें पुरुष का अर्थ होता है - विवेकशील प्राणी और अर्थ का मतलब होता है - लक्ष्य। इसलिए पुरुषार्थ के संबंध में यह कहा जाता है कि विवेकशील प्राणी अर्थात् पुरुष के लक्ष्य को पुरुषार्थ कहते हैं। हिन्दू धर्म के अनुसार चार्वाक दर्शन को छोड़कर चार प्रकार के पुरुषार्थ को स्वीकार किया गया है — अर्थ, धर्म, काम और मोक्ष। चार्वाक दर्शन एक ऐसा दर्शन है जो केवल दो पुरुषार्थ - अर्थ और काम को मानता है।

(1) अर्थ :- भारतीय दर्शन में अर्थ को पुरुषार्थ मानते हुए कहा गया है कि अर्थ के अभाव में मानव जीवन नहीं चल सकता है इसलिए मनुष्य को उचित साधनों के द्वारा धनोपार्जन करना चाहिए। यहाँ साधन की शुद्धता पर काफी बल दिया गया है और कहा गया है कि अशुभ साधनों के द्वारा धनोपार्जन नहीं करना चाहिए। अर्थ के संबंध में यह भी कहा गया है कि 'धनात् धर्मः ततः सुखम्'। कहने का अर्थ यह है कि धन से धर्म और धर्म से सुख मिलता

है इसलिए मानव के जीवन में धन की आवश्यकता होती है। भर्तृहरि ने अर्थ के महत्व को स्वीकार करते हुए कहा है कि – "धनी व्यक्ति ही कुलीन, ज्ञानी, पंडित, गुणी, वक्ता और सुन्दर माने जाते है।" अर्थ के संबन्ध में यह भी कहा गया है कि अर्थ से उतना ही संबन्ध रखना चाहिए जितना आवश्यकता है क्योंकि यदि कोई व्यक्ति आवश्यकता से अधिक धन का संचय करता है तो वह अनैतिकता को प्रश्रय देता है

(2) धर्म :- सामाजिक एवं पारलौकिक दृष्टिकोण से 'धर्म' को पुरुषार्थ के रूप में स्वीकार किया जाता है 'धर्म' शब्द 'धृ' धातु से बना है जिसका अर्थ होता है - धारण करना। अर्थात् जिसको धारण किया जाये वही धर्म है। डा० राधाकृष्णन् ने अपनी पुस्तक "Eastern Religions and Western Thought" में धर्म के स्वरूप पर प्रकाश डालते हुए कहा है कि- धर्म से जीवन के विभिन्न कार्यों में संगति आती है और इससे उनको दिशा प्राप्त होती है। यह जीवन का परिपूर्ण नियम है और ऐसे सम्पूर्ण मानव का सामंजस्य है जो अपनी जीवनचर्या को

केसी सही और उचित नियम के अनुसार चलाता है। धर्म के संबंध में यह भी कहा गया है कि धर्म हमारे पारलौकिक आनन्द का साधन ही नहीं बल्कि उन आचरणों का भी समुदाय है जिनके पालन से समाज सुसंगठित रहता है। धैर्य, क्षमा, दम, अस्तेय, इत्यादि का पालन करना सभी मनुष्यों के लिए बतलाया गया है।

③ काम :- भारतीय दर्शन में काम को भी एक पुरुषार्थ माना गया है। यहाँ बतलाया गया है कि मनुष्य को चाहिए कि वह नैतिक रूप से अपने इन्द्रिय सुख की प्राप्ति करे। हिन्दू धर्म में यद्यपि इन्द्रिय सुख भोगने का आदेश दिया गया है लेकिन उनमें लिप्त रहने का आदेश नहीं दिया गया है। यहाँ इन्द्रियों को नियंत्रित करने के लिए कहा गया है।

④ मोक्ष :- भारतीय दर्शन में मोक्ष को चरम पुरुषार्थ माना गया है। जीवन एवं मरण के भवचक्र से हमेशा के लिए छुटकारा पाना ही मोक्ष कहलाता है। हिन्दू धर्म में संसार को दुःखों से परिपूर्ण माना गया है। प्रत्येक मनुष्य इससे हमेशा के लिए छुटकारा पाना चाहता है क्योंकि जबतक उसका पुनर्जन्म होता रहेगा तबतक उसे सांसारिक दुःखों का सामना करना पड़ेगा। अतः मोक्ष को प्राप्त करना मानव जीवन का चरम लक्ष्य बन जाता है।